

(ख) प्रत्येक फर्ब ग्रीर उद्योग को इस निगम ने कितनी राशि का ऋण और अनुदान दिया है और क्या सरकार को कुछ ऐसे जाती और नकली उद्योग का पता चला है जिनका अस्तित्व केवल कागज पर ही था और यदि हाँ, तो उनके विरुद्ध अब तक किन प्रकार की कार्यवाही की गई है; और

(ग) क्या कम्पनियों और उद्योगों के नाम से लिए गए ऋणों का उपयोग अन्य प्रयोजनों के लिए किया गया था और यदि हाँ, तो ऐसी कितनी कम्पनियों का सरकार को पता चला है और उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई है ?

बिस्व मंत्री (श्री एच० एम० पटेल) :

(क) से (ग). यथा सम्भव सूचना इकट्ठी की जा रही है और सदन के पटल पर रख दी जायेगी ।

Engagement of Computers of M/s Mafatlal and Tatas by G.I.C.

10299. SHRI RAJARAM SHANKER. RAO MANE:

SHRI S. G. RUGAIYAN:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the General Insurance Corporation has engaged privately owned computers of M/s Mafatlal, Tatas and Computronics for processing its work;

(b) what is the total amount paid to these private companies for processing the work of General Insurance Corporation;

(c) how much is spent on paper stationery, etc. for carrying on this work; and

(d) whether Government have given their approval?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI H. M. PATEL): (a) and (b). The General Insurance Corporation of India had utilized the services of Computronics India and paid to them a sum of Rs. 20,000/-. Its two subsidiaries, namely, Oriental Fire & General Insurance Co. Ltd. and National

Insurance Co. Ltd. had engaged the services of Mafatlals and Tatas respectively and paid to them Rs. 2,40,000 and Rs. 5,237 respectively.

(c) The aforesaid payments include the cost of payment and stationery etc.

(d) In terms of its Memorandum Association, the General Insurance Corporation of India is authorised to remunerate any person, persons or company for services rendered or to be rendered to it and hence there was no necessity for the Government to give any approval.

तस्करों को छोड़ने के बाद विदेशी मुद्रा रक्षित निधि में वृद्धि

10300. श्री एल० एल० सोमानी : क्या बिस्व मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जनता सरकार ने भूतपूर्व सरकार से विदेशी मुद्रा की कितनी रक्षित निधि अपने अधिकार में ली थी;

(ख) क्या इस निधि में विशेष तस्करों को छोड़े जाने के बाद कुछ वृद्धि हुई है; और

(ग) यदि हाँ, तत्सम्बन्धी व्यौरा क्या है ?

बिस्व मंत्री (श्री एच० एम० पटेल) :

(क) 23 मार्च, 1977 को कामकाज के बन्द होने के समय भारत का विदेशी मुद्रा का भण्डार 2780.6 करोड़ रुपये का था ।

(ख) और (ग). तब से भारत के विदेशी मुद्रा के भण्डार में काफी में वृद्धि हुई है और 5 मई 1978 को यह राशि 4730.4 करोड़ रुपये की थी । यह बताना सम्भव नहीं कि विदेशी मुद्रा के भण्डार में किम-किम मद का कितना-कितना अंशदान है क्योंकि यह भण्डार देश के बाह्य लेनदेनों की निबल राशि का सूचक होता है ।

Banks Flush with Funds

10301. SHRI D. D. DESAI: Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether Government has seen the news item in *Economic Times* of April 11, 1978; that banks flush with funds;